RNI NO. MPHIN/2022/85285
डाक पंजी.क्र. - MP/KDW/93/2026-28
राष्ट्रीय मासिक समाचार पत्र
हलधर किसान
KISAN PLUS TV | KISAN PLUS Radio
स्मार्ट किसान की पहली पसन्द Haldharkisankgn@gmail.com
वर्ष 05 अंक 06 (प्रति माह) अगस्त 2026 पृष्ठ-8 मूल्य, 5 रुपये

जिला सहकारी केंद्रीय बैंक खरगोन ने सहकारिता के क्षेत्र में रचा नया कीर्तिमान

उपार्जन, डिपाजिट, लाभ, खाद वितरण, ऋण वसूली में प्रदेशभर में अग्रणी

राष्ट्रीय मासिक समाचार पत्र हलधर किसान

खरगोन. जिला सहकारी केंद्रीय बैंक मर्यादित, खरगोन ने सहकारिता एवं किसान हितैषी सेवाओं के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियां अर्जित करते हुए प्रदेश में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। बैंक ने रबी उपार्जन, रासायनिक खाद वितरण, ई.विकास पोर्टल के सफल संचालन तथा कृषि ऋण वितरण एवं वसूली में उत्कृष्ट कार्य किया गया है, जिससे लाखों किसानों को शासन की शुन्य प्रतिशत ब्याज योजना का समय पर लाभ प्राप्त हुआ है।

वर्ष 2025.26 के दौरान बैंक अमनातों में गत वर्ष की तुलना में 25928.16 लाख की वृद्धि हुई हैं इसी प्रकार बैंक का सकल लाभ गत वर्ष 3088.02 लाख था और इस वर्ष बैंक का सकल लाभ 5065.83 लाख हुआ है। बैंक का शुद्ध लाभ गत वर्ष 31.03.2025 पर 403.91 लाख हुआ एवं इस वर्ष 31.03.2026 पर 1758.83 लाख का लाभ अर्जित किया है। बैंक का एनपीए भी 31.03.2026 पर गत वर्ष से 0.58 प्रतिशत कम हुआ है।

रबी विपणन वर्ष 2026.27 में खरगोन एवं बडवानी जिले के 29 उपार्जन केन्द्रों के माध्यम से 13193 किसानों से 777549.90 मीट्रिक टन गेहूँ का उपार्जन कर किसानों को रू 20410.68 करोड़ से अधिक का भुगतान किया जा चुका है। इसी प्रकार 4,415 किसानों से 14,277.75 मीट्रिक टन चना का उपार्जन कर रुपए 83.88 करोड़ का भुगतान भी सफलतापूर्वक किया गया।

जिला सहकारी केंद्रीय बैंक खरगोन की मुख्य कार्यपालन अधिकारी संध्या रोकड़े ने बताया की हम शासन, आयुक्त सहकारिता एवं पंजीयक सहकारी संस्थाएं भोपाल, अपेक्स बैंक भोपाल एवं सयुंक्त आयुक्त सहकारिता व बैंक प्रशासक बी एल मकवाना के निर्देशन में किसानों को त्वरित, पारदर्शी एवं गुणवत्तापूर्ण सेवाएँ उपलब्ध कराने के लिए निरंतर प्रतिबद्ध है।

सहकारिता के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने की दिशा में निरंतर कार्य कर रहें है। बैंक से संबद्ध खरगोन एवं बडवानी जिले की 182 बहुउद्देशीय प्राथमिक कृषि साख सहकारी समितियों के माध्यम से वर्ष 2025.26 में 3,03,799 मीट्रिक टन रासायनिक खाद का भंडारण तथा 2,21,423 मीट्रिक टन खाद का वितरण किया गया है।

इससे किसानों को समय पर पर्याप्त मात्रा में उर्वरक उपलब्ध कराया जा सका है।

राज्य शासन द्वारा लागू ई.विकास पोर्टल के माध्यम से खाद वितरण व्यवस्था को पूर्णतः पारदर्शी एवं वैज्ञानिक बनाया गया है। किसानों को उनकी पात्रता एवं फसल क्षेत्र के अनुसार ऑनलाइन टोकन जारी किए जा रहे हैं, जिससे अनावश्यक भीड़ एवं प्रतीक्षा समाप्त हुई है और किसानों को सुगमता से खाद उपलब्ध हो रही है। कृषि ऋण वितरण एवं वसूली के क्षेत्र में भी बैंक ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। बैंक से संबद्ध खरगोन एवं बड़वानी जिले की 182 प्राथमिक कृषि साख सहकारी समितियों के माध्यम से किसानों को फसल ऋण उपलब्ध कराया जा रहा है तथा वर्ष के दौरान ऋण वसूली भी 76.79 प्रतिशत की जाकर गत वर्ष की तुलना में 0.32 प्रतिशत अधिक वसूली प्राप्त कर बैंक ने प्रदेश में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए सर्वाधिक वसूली करने वाला जिला सहकारी केंद्रीय बैंक बनने का गौरव प्राप्त किया है। यह उपलब्धि खरगोन एवं बड़वानी जिले की सहकारिता व्यवस्था एवं किसानों के विश्वास का प्रमाण है।

प्राकृतिक खेती से कुल्लू की महिला किसान ने लिखी सफलता की इबारत, 2 हजार किसानों को भी किया प्रेरित, दिया प्रशिक्षण

राष्ट्रीय मासिक समाचार पत्र हलधर किसान

हिमाचल प्रदेश.

हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिले के पहाड़ी गांव में रहने वाली अनीता नेगी इन दिनों न केवल हिमाचल प्रदेश बल्कि समूचे देश में प्राकृतिक खेती को लेकर चर्चाओं में बनी हुई है। यह महिला प्राकृतिक खेती कर खुद कमाई नहीं कर रही हैं, बल्कि दूसरे किसानों को भी प्राकृतिक खेती के लिए प्रेरित कर रही हैं। वह अब तक 2,000 से अधिक किसानों को प्रशिक्षण और मार्गदर्शन दे चुकी हैं। उनका खेत वैज्ञानिकों, छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए भी सीखने का केंद्र बन गया है।

माना जाता है कि प्राकृतिक खेती आमतौर पर परिवार की जरूरतें पूरी करने का जरिया रही है। छोटे खेत, मौसम की अनिश्चितता और बाजार तक पहुंच की मुश्किलों के कारण किसानों के लिए अच्छी कमाई करना चुनौतीपूर्ण होता है। लेकिन बंजार के तरगाली गांव की अनीता नेगी ने इस सोच को बदल दिया है। उन्होंने अपनी 20 बीघा जमीन को सफल कृषि उद्यम में बदल दिया है। इस साल उनकी कमाई करीब 70 लाख रुपये तक पहुंचने की उम्मीद है।

2018 में शुरू किया प्राकृतिक खेती का सफर

मीडिया रिपोर्ट के अनुसार 12वीं पास अनीता नेगी ने वर्ष 2018 में कृषि विभाग के आत्मा प्रोजेक्ट के जरिए प्राकृतिक खेती के बारे में जानकारी हासिल की। इसके बाद उन्होंने गाजियाबाद स्थित नेशनल सेंटर फॉर ऑर्गेनिक फार्मिंग में प्रशिक्षण लिया। शुरुआत में उनके पास खेती के लिए ज्यादा संसाधन नहीं थे। यहां तक कि उनके पास गाय भी नहीं थी।

प्राकृतिक खेती के लिए जरूरी जीवामृत और बीजामृत बनाने के लिए उन्होंने पड़ोसियों से गोबर और गोमूत्र लिया। अनीता ने शुरुआत सिर्फतीन बीघा जमीन से की। प्राकृतिक खेती के अच्छे परिणाम मिलने के बाद उन्होंने अगले साल एक गाय खरीदी और धीरे.धीरे अपनी पूरी जमीन पर प्राकृतिक खेती शुरू कर दी।

1,500 पौधों से शुरूआत, अब 70 हजार पौधे

अनीता ने अपनी आमदनी को पूरे साल बनाए रखने के लिए खेती में विविधता अपनाई। वर्ष 2020 में उन्होंने विदेशी किस्म के सेब समेत अन्य फलों के पौधों की नर्सरी शुरू की। शुरुआत में नर्सरी में करीब 1,500 पौधे थे। धीरे-धीरे नर्सरी का विस्तार हुआ और पौधों की संख्या 20 हजार, फिर 30 हजार तक पहुंची। अब उनकी नर्सरी में अलग-अलग फलों की करीब 70 हजार पौध तैयार हैं।

इस साल 70 लाख रुपये कमाई की उम्मीद

अनीता नेगी के खेत से पिछले साल करीब 50 लाख रुपये की आमदनी हुई थी। इस साल नर्सरी के तैयार पौधों, सेब और दूसरी फसलों की बिक्री से उनकी कुल आय करीब 70 लाख रुपये तक पहुंचने की उम्मीद है।

खेती की लागत हुई कम

अनीता के मुताबिक, पहले खेती में रासायनिक खाद और दवाओं पर करीब 60 हजार रुपये खर्च होते थे। अगर टमाटर जैसी नकदी फसल उगाई जाती थी तो खर्च करीब 1 लाख रुपये तक पहुंच जाता था। इसके बावजूद मुनाफा ज्यादा नहीं होता था। प्राकृतिक खेती अपनाने के बाद उन्होंने खेती की लागत कम करने के साथ-साथ अलग-अलग फसलों को शामिल कर अपनी आमदनी के नए रास्ते बनाए।

अनीता सिर्फ खुद खेती कर कमाई नहीं कर रही हैं, बल्कि दूसरे किसानों को भी प्राकृतिक खेती के लिए प्रेरित कर रही हैं। वह अब तक 2,000 से अधिक किसानों को प्रशिक्षण और मार्गदर्शन दे चुकी हैं। उनका खेत वैज्ञानिकों, छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए भी सीखने का केंद्र बन गया है। प्राकृतिक खेती और कृषि क्षेत्र में उनके काम को कृषि विभाग, केंद्रीय कृषि मंत्रालय, विश्वविद्यालयों और कृषि विज्ञान केंद्रों की ओर से भी सम्मान और पहचान मिली है।

अनीता नेगी की नर्सरी से पौधे खरीदने के लिए दूर.दराज से किसान आते हैं। यह उनके लिए एक अच्छा रोजगार का साधन बन गया है। अनीता नेगी ने एक मॉडल गांव भी तैयार किया है।

लाल किले की प्राचीर से पीएम मोदी ने किसानों से किया रसायन.मुक्त खेती अपनाने का आह्वान

राष्ट्रीय मासिक समाचार पत्र हलधर किसान

नई दिल्ली.

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर लाल किले की प्राचीर से राष्ट्र को संबोधित करते हुए 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की यात्रा को तेज करने के लिए सात सूत्रीय सुधार रूपरेखा सप्त धारा पेश की।

उन्होंने कहा इसमें इसमें विनिर्माण, कृषि एवं खाद्य उत्पादन तथा प्रसंस्करण, प्रौद्योगिकी एवं नवाचार, लॉजिस्टिक, रक्षा, हरित एवं नीली अर्थव्यवस्था (समुद्री अर्थव्यवस्था) तथा सॉफ्ट पावर शामिल है। देश आजादी की 80वीं वर्षगांठ मना रहा है।

इस मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लाल किले से देश को संबोधित करते हुए किसानों और खेती की बदलती तस्वीर पर भी बात की। उन्होंने खेती को सिर्फ उत्पादन बढ़ाने का जरिया नहीं, बल्कि गांव की अर्थव्यवस्था और देश की आत्मनिर्भरता की मजबूत नींव के तौर पर सामने रखा। किसानों की लागत कम करने, उनकी उपज को बेहतर बाजार दिलाने और भारतीय कृषि उत्पादों को दुनिया तक पहुंचाने पर प्रधानमंत्री ने विशेष जोर दिया।

अपने संबोधन में प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत को किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं रहना है। इसके लिए खेत से बाजार तक की व्यवस्था को मजबूत करना, फूड प्रोसेसिंग को बढ़ावा देना और किसानों को नई तकनीक व वैश्विक बाजारों से जोड़ना जरूरी है। उन्होंने खाद की कीमतों, मिलेट्स और मसालों की वैश्विक मांग, केमिकल. फ्री खेती और ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक भागीदारी जैसे मुद्दों का भी उल्लेख किया।

महंगी खाद के बीच किसानों को कीमतों से राहत

खेती में लागत बढ़ने का सीधा असर किसान की कमाई पर पड़ता है। प्रधानमंत्री ने अंतरराष्ट्रीय बाजार में खाद की बढ़ी कीमतों का जिक्र करते हुए कहा कि सरकार ने इसका पूरा बोझ भारतीय किसानों पर नहीं पड़ने दिया। उन्होंने बताया कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में यूरिया की एक बोरी की कीमत करीब 3,000 रुपये तक पहुंच गई है, जबकि भारतीय किसानों को यह करीब 300 रुपये में उपलब्ध कराई जा रही है। इसी

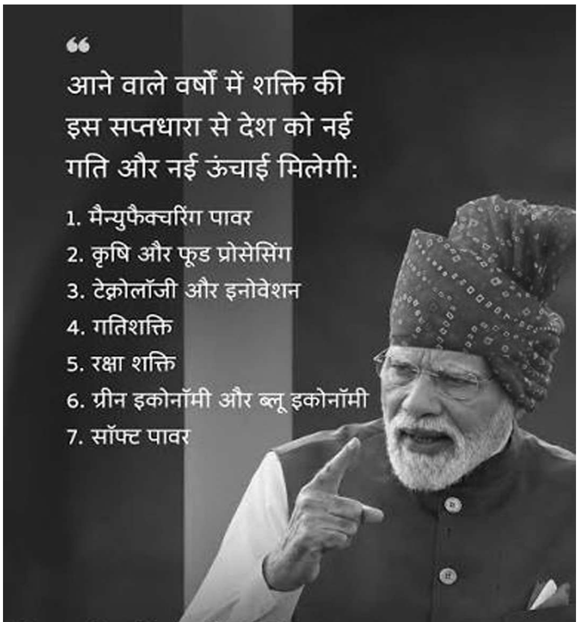

स्वतंत्रता दिवस पर पीएम मोदी, 15 अगस्त 2026

तरह डीएपी की वैश्विक कीमत करीब 5,000 रुपये तक पहुंचने का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि भारत में किसानों को यह 1,350 रुपये में उपलब्ध है। प्रधानमंत्री ने कहा कि सरकार खाद की कीमतों के बढ़े हुए बोझ को अपने स्तर पर संभाल रही है, ताकि किसानों के लिए खेती की लागत को नियंत्रित रखा जा सके।

खेत से एक्सपोर्ट मार्केट तक पहुंचेगी उपज

किसान की फसल खेत में अच्छी हो, इतना ही काफी नहीं है। उसे सही बाजार और बेहतर कीमत मिले, तभी उसकी मेहनत का पूरा लाभ मिल सकता है। प्रधानमंत्री ने कृषि उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय बाजार से जोड़ने पर इसी वजह से जोर दिया।

उन्होंने कहा कि विभिन्न एफटीए के जरिए भारतीय कृषि उत्पादों के लिए दूसरे देशों के बाजारों में संभावनाएं बढ़ रही हैं। ऐसे में भारत को खेत से लेकर एक्सपोर्ट मार्केट तक पूरी वैल्यू चेन तैयार करनी होगी।

इसमें फसल की गुणवत्ता, ग्रेडिंग, प्रोसेसिंग और पैकेजिंग से लेकर अंतरराष्ट्रीय मानकों तक कई स्तर शामिल हैं। इससे भारतीय उत्पाद विदेशी बाजारों की जरूरत के मुताबिक तैयार किए जा सकेंगे और किसानों को नए बाजार मिल सकते हैं।

मिलेट्स और मसालों को ग्लोबल ब्रांड बनाने पर जोर

भारत के पारंपरिक कृषि उत्पादों की दुनिया में अलग पहचान है। प्रधानमंत्री ने मिलेट्स, मसाले, फल और फूल जैसे उत्पादों का उल्लेख करते हुए इन्हें वैश्विक स्तर पर ब्रांड बनाने की जरूरत बताई। मोटे अनाज और भारतीय मसालों की मांग को बेहतर पैकेजिंग, प्रोसेसिंग और ब्रांडिंग के जरिए बड़े बाजार तक ले जाया जा सकता है। इससे किसानों के लिए भी अपनी उपज की वैल्यू बढ़ाने के अवसर बन सकते हैं। फूड प्रोसेसिंग इस पूरी प्रक्रिया की अहम कड़ी है। अगर किसान की उपज सिर्फ़ कच्चे माल के तौर पर बेचने के बजाय उससे तैयार उत्पाद बाजार तक पहुंचाया जाए, तो खेती से जुड़ी कमाई के नए रास्ते खुल सकते हैं।

केमिकल.फ्री खेती को मिलेगा बढ़ावा

प्रधानमंत्री ने केमिकल. फ्री खेती को भविष्य की एक बड़ी संभावना के रूप में भी सामने रखा। दुनिया के कई बाजारों में सुरक्षित और कम रसायन वाले कृषि उत्पादों की मांग बढ़ रही है। भारतीय किसानों के लिए यह एक नया बाजार तैयार कर सकता है, लेकिन इसके लिए उत्पादन के साथ गुणवत्ता और प्रमाणन पर भी ध्यान देना होगा। अंतरराष्ट्रीय बाजार में जगह बनाने के लिए पैकेजिंग और निर्यात मानकों को पूरा करना भी जरूरी होगा। यानी केमिकल.फ्री खेती का फायदा तभी बड़े स्तर पर मिल सकता है, जब खेत में तैयार उत्पाद से लेकर उसकी बिक्री तक पूरी व्यवस्था मजबूत हो।

आत्मनिर्भर भारत में किसान अहम कड़ी

प्रधानमंत्री ने आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को कृषि से जोड़ते हुए कहा कि आत्मनिर्भरता का मतलब केवल ज्यादा फसल पैदा करना नहीं है। कृषि क्षेत्र में बीज, खाद, तकनीक, मशीनरी, प्रोसेसिंग और बाजार से जुड़ी व्यवस्थाओं को भी मजबूत करना होगा। किसान को खेती के लिए जरूरी संसाधन समय पर मिलें और फसल तैयार होने के बाद उसे सही बाजार उपलब्ध हो, तो कृषि की पूरी व्यवस्था ज्यादा मजबूत हो सकती है। आधुनिक तकनीक और फूड प्रोसेसिंग इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

ग्रामीण महिलाओं की बढ़ेगी आर्थिक ताकत

स्वतंत्रता दिवस के संबोधन में ग्रामीण महिलाओं की भूमिका का भी जिक्र हुआ। प्रधानमंत्री ने बताया कि सरकार ने 3 करोड़ लखपति दीदी बनाने का लक्ष्य हासिल कर लिया है और अब इसे बढ़ाकर 6 करोड़ करने का लक्ष्य रखा गया है। गांवों में महिला स्वयं सहायता समूह खेतीए पशुपालनए खाद्य प्रसंस्करण और छोटे कारोबार से जुड़कर परिवार की आय बढ़ाने में योगदान दे रहे हैं। ऐसे समूहों को बाजार और प्रशिक्षण से जोड़ने पर ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी और मजबूत हो सकती है। प्रधानमंत्री ने भारत में सेमीकंडक्टर क्षेत्र की प्रगति का भी उल्लेख किया और बताया कि देश में उत्पादन की क्षमता बढ़ रही है। इसके जरिए उन्होंने आत्मनिर्भरता को सिर्फ़ एक क्षेत्र तक सीमित न रखते हुए कई क्षेत्रों में आगे बढ़ाने की बात कही। कृषि के स्तर पर इसका मतलब है कि किसान को बेहतर बीज और खाद से लेकर आधुनिक मशीनरी, तकनीक, प्रोसेसिंग, भंडारण और बाजार तक मजबूत व्यवस्था मिले।

खरगोन कृषि उपज मंडी बंपर ड्रा में नागझिरी के किसान को मिला ट्रैक्टर, 20 किसानों को मिली 2.8 लाख रुपए की नकद राशि

5 साल बाद दोबारा शुरु हुई योजना, 6,804 कूपन के बीच 21 किसानों की चमकी किस्मत

राष्ट्रीय मासिक समाचार पत्र हलधर किसान

खरगोन।

कृषि उपज मंडी में शनिवार को स्वतंत्रता दिवस पर कृषक विपणन पुरस्कार योजना के तहत पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। ड्रॉ में वर्ष 2020-21 से वर्तमान तक जारी जारी किए गए 6,804 कूपन शामिल किए गए। इन कूपन में 21 भाग्यशाली किसान चुने गए। योजना के तहत 20 किसानों 2 लाख 8 हजार रुपए की नकद राशि दी गई, जबकि बंपर ड्रॉ में 35 एचपी का ट्रैक्टर दिया गया। उल्लेखनीय है कि पुरस्कार योजना करीब 5 साल बाद शुरु की गई है। कोरोना काल से बंद योजना के दोबारा शुरु होने से किसानों में उत्साह देखा गया।

कार्यक्रम के दौरान एक बड़े से तपेले में इन कूपन को इकट्ठा किया गया। इसके बाद किसानों के हाथों से ही कूपन निकलवाए गए। ट्रैक्टर के विजेता ग्राम नागझिरी के पुरुषोत्तम सोलंकी रहे। इनका कूपन नंबर 11329 पहाड़सिंगपुरा की 3 वर्षीय नन्हीं बच्ची गौरी डंडीर ने निकाला। ड्रॉ विजेता की घोषणा मुख्य अतिथि विधायक बालकृष्ण पाटीदार ने की। विधायक श्री पाटीदार ने नकद राशि सहित बंपर ड्रा विजेता किसान को बधाई देते हुए कहा कि शासन वर्ष 2026 को कृषक कल्याण वर्ष के रूप में मना रहा है। इसी के तहत किसानों को मंडी में उपज बेचने के लिए प्रोत्साहित करने वाली यह पुरस्कार योजना का ड्रॉ खोला जा रहा है। सरकार की कल्याणकारी योजनाएं किसानों के लिए हैं। इन योजनाओं की जानकारी के साथ ही कृषि में होने वाले नवाचारों के लिए शासन-प्रशासन स्तर पर शिविर लगाए जाते है। मेरी अपील है कि किसान इन शिविरों में शामिल होकर खेती- किसानी में आ रहे बदलाव और योजनाओं की जानकारी लेकर अपडेट रहे। अपनी उपज मंडी में ही बेचें। विशेष अतिथि के रूप में भारतीय किसान संघ जिलाध्यक्ष सदाशिव पाटीदार, समाजसेवी संतोष पाटीदार, भाजपा मंडल अध्यक्ष भूपेन्द्र पाटीदार, मंडी व्यापारी मन्नालाल जायसवाल और राकेश जैन सहित बड़ी संख्या में मंडी व्यापारी व किसान बंधु उपस्थित रहे। मंडी सचिव श्रीमती शर्मिला निनामा ने अपने उद्बोधन में कृषि विपणन पुरस्कार योजना, मुख्यमंत्री कृषक जीवन कल्याण योजना और हम्माल तुलावटी सहायता योजना की जानकारी दी।

20 को मिली नकद राशि

कार्यक्रम में बंपर ड्रॉ के अलावा 20 किसानों को क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ पुरस्कार के रुप में क्रमशः 21 हजार, 15 हजार, 11 हजार और 5 हजार रुपए के नकद पुरस्कार दिए गए। बंपर ड्रॉ के साथ ही 6 नकद राशि पुरस्कार में भी नागझिरी के किसानों के नाम ही रहे। इन किसानों को कुल 2 लाख 8 हजार रुपए की नकद राशि दी गई।

मौसम विभाग का अनुमान देश में सामान्य से 12% कम बरसा मानसून, एल नीनो का असर

राष्ट्रीय मासिक समाचार पत्र हलधर किसान

नई दिल्ली। देश के कई राज्यों में जहां मूसलाधार बारिश से जनजीवन अस्त-व्यस्त हो रहा है तो वही देश के कई राज्यों में सामान्य से कम बारिश दर्ज की गई है।

मौसम विभाग का कहना है कि यह एलनीनो का असर है। मानसून के बचे करीब डेढ़ महीने पर एलनीनो का दबाव बढ़ता दिख रहा है। प्रशांत महासागर में एलनीनो लगातार मजबूत हो रहा है, जबकि हिंद महासागर का इंडियन ओशन डायपोल अभी न्यूट्रल है।

सितंबर में आईओडी के पॉजिटिव होने का अनुमान है, लेकिन इसकी ताकत इतनी अधिक रहने की उम्मीद नहीं है कि वह एलनीनो के असर को पूरी तरह रोक सके। ऐसे में मानसून की कुल बारिश सामान्य से नीचे रहने का खतरा बढ़ गया है। मानसूनी सीजन में अभी तक बारिश सामान्य से 12 प्रतिशत कम है।

आईएमडी ने 31 जुलाई को अगस्त-सितंबर में सामान्य से कम बारिश का अनुमान जताया था। एलनीनो के मजबूत होने और आईओडी के सीमित सहारे को देखते हुए मानसून की कुल बारिश आईएमडी के अनुमान से भी नीचे जा सकती है। यह सामान्य बारिश के 90 प्रतिशत से भी नीचे जाने की आशंका जता रहे हैं। यानी दस फीसद से ज्यादा कम होने की आशंका। पूर्वानुमान 8 फीसद डेफिसिट का था।

आईएमडी के अनुसार प्रशांत महासागर के मध्य और पूर्वी हिस्से में समुद्र की सतह का तापमान सामान्य से ऊपर बना हुआ है। मानसून मिशन कपल्ड फेरकास्ट सिस्टम के मुताबिक आने वाले महीनों में एलनीनो और मजबूत हो सकता है। समुद्र का पानी सामान्य से करीब 2.9 डिग्री सेल्सियस ज्यादा गर्म हो सकता है। विश्व मौसम संगठन के अनुसार इसकी तीव्रता नवंबर के आसपास चरम पर पहुंच सकती है।

एलनीनो की मजबूती मानसून के लिए ठीक नहीं। इससे मानसूनी हवाओं और नमी के प्रवाह पर असर पड़ सकता है। हालांकि इसका यह मतलब नहीं है कि पूरे देश में बारिश कम ही होगी। बंगाल की खाड़ी में बनने वाली मौसम प्रणालियां और स्थानीय मौसमी परिस्थितियां कई क्षेत्रों में अच्छी बारिश करा सकती हैं।

ऐसे में हिंद महासागर में आईओडी की भूमिका अहम हो जाती है, जो सितंबर में पॉजिटिव हो सकता है। उस समय इसका औसत तापमान प्लस 0.6 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। आईओडी के प्रभाव में पश्चिमी हिंद महासागर गर्म और पूर्वी हिस्सा ठंडा रहता है। इससे भारत की ओर नमी आने के हालात बने रह सकते हैं, जिससे एलनीनो का असर कुछ कम रह सकता है।

इसका असर बारिश के आंकड़ों में भी दिख रहा है। आईएमडी के अनुसार पूरे मानसून सीजन में सामान्य से 12 प्रतिशत कम बारिश हुई। पूर्व और पूर्वोत्तर भारत में कमी 26 प्रतिशत, दक्षिण प्रायद्वीप में 19 प्रतिशत और उत्तर-पश्चिम भारत में 11 प्रतिशत रही। अगस्त में बारिश कमजोर रही है। बिहार में सामान्य से 37 प्रतिशतए झारखंड में 25 प्रतिशत और पूर्वी उत्तर प्रदेश में 28 प्रतिशत की कमी बनी हुई है। विदर्भ और मराठवाड़ा में भी कम बारिश चिंता बढ़ा रही है। दूसरी ओर ओडिशा में सामान्य से 27 प्रतिशत और बंगाल में दो प्रतिशत अधिक बारिश हुई है।

मौसम विज्ञानियों का आंकलन है कि आईओडी कुछ राहत जरूर दे सकता है, लेकिन एलनीनो के बढ़ते वेग को पूरी तरह रोक नहीं सकता है। सितंबर तक आईओडी का असर बढ़ेगा।

वंदे मातरम् के संगीत का इतिहास

आज देश जब वंदेमातरम् की 150वी जयंती मना रहा है, युवा पीढ़ी को वंदेमातरम् के संगीत में जानकारी होना चाहिए। राष्ट्रगीत वंदे मातरम् के संगीत का दिलचस्प इतिहास है। वंदे मातरम् को संगीतबद्ध करना संगीतकारों के लिए गर्व की बात तो थी ही, लेकिन यह राष्ट्र धर्म का एक अत्यंत चुनौतिपूर्ण कार्य भी था। संस्कृतनिष्ठ शब्दों की लयकारी करना और उसे सामूहिक गान के लिए उपयुक्त बनाना विलक्षण सांगीतिक प्रतिभा के सामर्थ्य की ही बात थी। इस गीत को भारतीय शास्त्रीय संगीत के मनीषियों ने अपनी प्रतिभा के पुष्प अर्पित किये हैं।

वंदे मातरम् की पहली धुन रवीन्द्रनाथ टैगोर ने बनाई और राष्ट्रीय कांग्रेस के बारहवें अधिवेशन में स्वयं प्रस्तुत की। 1904 ईसवी में रवीन्द्रनाथ टैगोर की आवाज में वंदे मातरम् का पहला ग्रामोफोन रेकार्ड बाजार में आया। इस बीच स्वतंत्रता संग्राम का आंदोलन तेज हो गया था। फ्रांस की रिकॉर्ड कंपनी पाथे ने इसे प्रकाशित किया। यह एक पैंटोग्राफजैसा रिकॉर्ड था। 1901 ईसवी में दक्षिणराजन सेन ने स्वयं का संगीतबद्ध वंदे मातरम् गाया। इसको संगीतबद्ध करने में सबसे प्रमुख नाम पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर का है, जिन्होंने लाहौर से इसकी सार्वजनिक प्रस्तुति शुरू की और देश भक्तों के बीच विभिन्न स्थानों पर गाते रहे। उनके संगीतबद्ध किये हुए वंदे मातरम् की विशेषता यह थी कि उन्होंने इसकी मूल प्रेरणा और शब्दों की गंभीरता को ध्यान में रखते हुए संगीत दिया।

एक अन्य संगीतकार दिलीप कुमार राय ने वंदे मातरम् की नई संगीत रचना तैयार की और उसे महात्मा गांधी की उपस्थिति में 29 अगस्त 1927 को प्रस्तुत किया। गांधी जी ने उनकी भूरी-भूरी प्रशंसा की। उनके दो रिकॉर्ड उपलब्ध हैं। उन्होंने अपनी आवाज में जो श्वंदे मातरम् गाया वह असम की लोक गीत शैली में है। दूसरा रिकॉर्ड कर्नाटक संगीतकार स्वर्गीय एमएस सुब्बलक्ष्मी के साथ गाया था। यह संगीत रचना राग बिलावल और राग बागेश्री का समन्वय है। वंदे मातरम् के संगीत से जुड़ा एक अन्य नाम मास्टर कृष्णराव का है। उन्होंने अकेले ही इसकी प्रस्तुतियां देना शुरू की थीं और इसको राष्ट्रगीत का दर्जा दिलाने के लिए प्रयत्नशील रहे। पूना में जन्में मास्टर कृष्णराव एक गायक अभिनेता थे। उन्होंने राग झिंझौटी में वंदे मातरम् तैयार किया जो सार्वजनिक गायन के लिए उपयोगी था। पण्डित पलुस्कर ने वंदे मातरम् को राग काफी में प्रस्तुत किया। इसी राग में निबद्ध पं. ओंकारनाथ ठाकुर का गाया वंदे मातरम् खूब सराहा गया। उन्होंने संपूर्ण गीत गाया। बाद में जब 1947 में सरदार वल्लभ भाई पटेल ने स्वतंत्रता दिवस की सुबह आकाशवाणी पर वंदे मातरम् गाने के लिए आमंत्रित किया तो ओंकारनाथ ठाकुर ने सावधान की मुद्रा में पूरा वंदे मातरम् गाया। 1935 से 1952 ईसवी के बीच कई विख्यात संगीतकारों ने वंदे मातरम् को संगीत दिया। उनमें से प्रमुख मराठी रंगमंच के अभिनेता केशव राव भोले, विष्णुपंत फ्गणीस, वीडी अभ्यंकर, मास्टर कृष्णराव और दिलीप कुमार राय प्रमुख हैं। विष्णुपंत फगणीस ने वंदे मातरम् को राग सारंग में प्रस्तुत किया। उस सभा में गोविंद वल्लभ पंत, डॉ. पट्टाभि सीतारमैया, दादा धर्माधिकारी भी उपस्थित थे। इसके बाद मोगूबाई कुर्डीकर ने राग मिश्र खंबावती में इसे गाया। बाद के समय में तिमिरबरन भट्टाचार्य ने राग दुर्गा में वंदे मातरम् की संगीत रचना की जो ब्रिटिश बैंड पर भी बजाया गया। राग दुर्गा की धुन मार्च पास्ट में बजने वाले गीत की तरह है। राग दुर्गा की धुन को नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने सिंगापुर रेडियो से प्रसारित करवाया जब उन्होंने आजाद हिन्द फौज की स्थापना की थी। वंदे मातरम् की एक लोकप्रिय धुन हेमन्त कुमार ने बनाई। इसके संगीत से जुड़े प्रसंगों को मास्टर कृष्ण राव ने विभिन्न अवसरों पर स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े नेताओं के समक्ष रखा। वे एक नई लोकप्रिय धुन एआर रहमान से बनाई है। उन्होंने 17 जनवरी 1950 को एक पत्रकार वार्ता में वंदे मातरम् की तीन संगीत रचनाएं भी प्रस्तुत की थी। हमारे समय के संगीतकार भी वंदे मातरम् की नयी.नयी धुनें बना रहे हैं।

भद्रा रहित होगा रक्षा बंधन, 28 को पूरे दिन बहनें भाई की कलाई पर बांध सकेगी रक्षासूत्र

राष्ट्रीय मासिक समाचार पत्र हलधर किसान

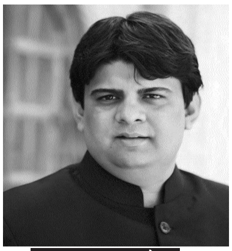
डॉ. सुदीप जैन

सावन शुक्ल पूर्णिमा को अटूट स्नेह और विश्वास का प्रतीक पर्व रक्षाबंधन 28 अगस्त शुक्रवार को भद्रा रहित उदयकालिक पूर्णिमा में मनाया जाएगा। रक्षाबंधन पर भद्रा का साया नहीं होने से बहने पूरे दिन भाई की कलाई पर राखी बांध सकेंगी।

रक्षाबंधन में भाई-बहन के परस्पर रक्षा की भावना से दोनों का आत्मबल पुष्ट होता है। भाई की कलाई में राखी के धागे बांध जहां बहन उसके दीर्घायुष्य, स्वास्थ्य, सुख, सौमनस्य की कामना करती है, वही भाई भी बहन की रक्षा का संकल्प लेता है। राखी की डोर पारस्परिक प्रेम को सुदृढ़ करती है।

अमजेर के ज्योतिषाचार्य डॉ. सुदीप सोनी (जैन) ने बताया कि सावन शुक्ल पूर्णिमा 28 अगस्त शुक्रवार की सुबह 9. 27 बजे तक ही पूर्णिमा तिथि रहेगी। उदया तिथि के कारण पूरे दिन पूर्णिमा मान होगा। भद्रा 27 अगस्त गुरुवार को खत्म हो जाएगा। ऐसे में रक्षाबंधन पर 28 अगस्त शुक्रवार को शतभिषा नक्षत्र में पूरे दिन राखी बांधी जाएगी।

शुभ योग में रक्षाबंधन का पर्व मनाने से ऐश्वर्य व सौभाग्य की वृद्धि होती है। भद्रा काल में राखी बांधना अशुभ माना जाता है। इसके अलावे अन्य कोई भी शुभ या मांगलिक कार्य भद्रा में करना वर्जित है। इससे अशुभ फल की प्राप्ति होती है।

राखी के दिन पूर्णिमा तिथि और शुक्रवार दिन का उत्तम संयोग बन रहा है। जिससे इस दिन की महत्ता और बढ़ गयी है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार शुक्रवार को सुख, सौहार्द और प्रेम का दिन माना जाता है। पूर्णिमा तिथि को चन्द्रमा की पूर्णता का प्रतीक माना गया है। रक्षाबंधन पर यह संयोग पारिवारिक संबंधों में स्नेह‍ संवाद और आत्मीयता बढ़ाएगा। इस दिन सूर्य सिंह राशि में, गुरु कर्क राशि में तथा शनि मीन राशि में विद्यमान रहेंगे। गुरु की स्थिति को ज्ञान, संस्कार व पारिवारिक मार्गदर्शन का प्रतीक है।

इन मुहुर्त में बांध सकेंगे रक्षासूत्र

हिन्दू पंचांग के अनुसार, इस बार भद्रा 28 अगस्त को सूर्योदय से पहले ही समाप्त हो रहा है। इस दिन शतभिषा नक्षत्र, अतिगंड योग का संयोग भी है। वहीं चंद्रमा भी शनि की राशि कुंभ में संचरण कर रहा है, जो इस दिन को और भी खास बना रहा है। ज्योतिषाचार्य श्री सोनी ने बताया कि 28 अगस्त को 3 मुहूर्त सबसे सर्वश्रेष्ठ है। इस दिन सुबह 6 बजकर 36 मिनट से लेकर 9 बजकर 45 मिनट का समय सबसे शुभ मुहूर्त है। दोपहर 12 बजकर 3 मिनट से लेकर 12 बजकर 53 मिनट के बीच भी भाइयों के कलाई पर राखी बांध सकते हैं। वहीं शाम 7 बजकर 43 मिनट से 9 बजकर 30 मिनट का समय भी सबसे शुभ मुहूर्त है। इस तीनों सर्वश्रेष्ठ मुहूर्त में राखी बांध बहने अपने भाइयों के किस्मत में चार चांद भी लगा सकती हैं। इस दिन सुबह 10 बजकर 54 मिनट से 12 बजकर 02 मिनट के बीच राहुकाल का समय है। इस समय रक्षासूत्र नही बांधे जा सकते। शास्त्रों में राहुकाल समय को शुभ काम से लिए अच्छा नहीं माना गया है।

चंद्रग्रहण से मुक्त होगा रक्षाबंधन, न लगेगी सूतक

श्रावण शुक्ल पूर्णिमा में 28 अगस्त शुक्रवार की सुबह 08. 04 बजे से 11. 22 बजे तक खंडग्रास चंद्रग्रहण लगेगा। चंद्रग्रहण का सूतक नौ घंटे पहले ही शुरू हो जाता है। यह चंद्रग्रहण भारत में नहीं दिखाई देगा। इसके कारण सूतक नहीं लगेगा।

ग्रहण को अंटार्कटिका, अफ्रीका, एशिया, यूरोप, हिंद महासागर, अटलांटिक महासागर व प्रशांत महासागर में देखा जाएगा।

वर्ग पहेली नं. 25

बाएं से दाएं

1. भारत की राजभाषा (2)
3. चौकसी, चौकीदारी (3)
6. अग्नि, आग (3)
7. भगवान् विष्णु (4)
9. जल, तोय, अंबु (2)
10. बड़े ठाठबाट वाला (4)
12. जहां सिक्के ढाले जाते हैं (4)
13. अर्थ, तात्पर्य (4)
14. अचानक, बिना श्रम के (4)
16. प्रतिध्वनि (2)
17. बुरा नाम (4)
19. गायक (3)
20. शहर (3)
21. टपकता हुआ, पूरा भीगा हुआ (2)

ऊपर से नीचे.

2. दिवाली, दीपोत्सेव (4)
3. पक्का खाना, विविध व्यंजन (4)
4. शासन (2)
5. जिसका कोई मूल्य न हो, अत्यधिक मूल्यवान (4)
8. प्रतिष्ठित होना, पहचान बनाना (5)
11. सम्मिलित होना (5)
13. बहुत बलशाली, हनुमान (4)
14. बहुत मोटा और लंबा सर्प (4)
15. वाहन व लोगों का आना जाना (4)
18. अंतः करण, दिल (2)

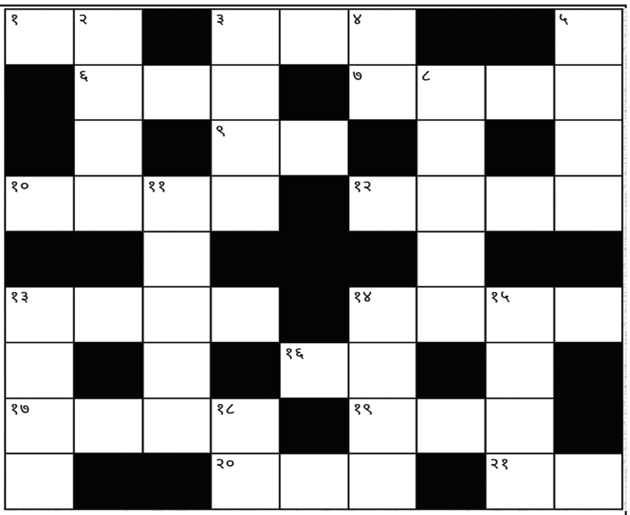

वर्ग पहेली नंबर 24 का हल

भारत में 1.2 मीट्रिक टन चावल की भूसी के तेल का अप्रयुक्त भंडार है, दक्षिण पूर्व एशिया ने की नीतिगत प्रोत्साहन की मांग

राष्ट्रीय मासिक समाचार पत्र हलधर किसान

वैश्विक चावल की भूसी के तेल की 70 प्रतिशत क्षमता का अभी तक दोहन नहीं किया गया है- दक्षिण पूर्व एशिया

चावल की भूसी के तेल के वैश्विक बाजार में 8 मिलियन टन की क्षमता है, जबकि वर्तमान उत्पादन 24 लाख टन है।

अंतर्राष्ट्रीय

बैंकॉक में 13 अगस्त को आयोजित इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन राइस ब्रान ऑयल 2026 में सॉल्वेंट एक्सट्रैक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एसईए) के कार्यकारी निदेशक बीवी मेहता के अनुसार ने भारत देश की रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि विश्व में लगभग 8 मिलियन टन (मीट्रिक टन) याने 70 प्रतिशत चावल की भूसी के तेल की क्षमता है। हालांकि, वर्तमान वैश्विक चावल की भूसी के तेल का उत्पादन 2.4 मिलियन टन है। उन्होंने कहा कि वैश्विक स्तर पर अभी भी 5.55 मिलियन टन चावल की भूसी के तेल का उत्पादन करने की गुंजाइश है।

यह महत्वपूर्ण है कि दुनिया को चावल की भूसी के तेल के 5.55 मिलियन टन के विशाल अप्रयुक्त अवसर के बारे में जागरूक किया जाए, जिसका पूरी तरह से पता लगाया जाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि भारत और चीन दुनिया में चावल की भूसी के तेल के प्रमुख उत्पादक हैंए और भारत का उत्पादन लगभग 1.1 मिलियन टन और चीन का 0.74 मिलियन टन है।

चावल की भूसी के तेल का प्रमुख उत्पादक होने के बावजूदए भारत की क्षमता का अभी पूरी तरह से उपयोग नहीं किया गया है। भारत में कुल 2.3 मिलियन टन उत्पादन की क्षमता है। भारतीय प्रयास अपेक्षाकृत बेहतर हैं, लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है।

कार्यकारी निदेशक श्री मेहता ने कहा कि अनुमान है कि भारत 2025-26 में लगभग 230 मिलियन टन धान और 154 मिलियन टन चावल का उत्पादन करेगा। इससे अनुमानित 13.1 मिलियन टन चावल की भूसी का उत्पादन होगा, जिसमें लगभग 2.3 मिलियन टन चावल की भूसी का तेल उत्पादन करने की क्षमता है।

भारत वर्तमान में केवल लगभग 1.10 मिलियन टन चावल की भूसी का तेल उत्पादन कर रहा है, जिससे अनुमानित 1.20 मिलियन टन की अप्रयुक्त क्षमता मौजूद है।

अनुसंधान एवं विकास की आवश्यकता

उन्होंने कहा कि पिछले दशक में इस अवसर में काफी वृद्धि हुई है और चावल की भूसी के तेल की क्षमता 2016.17 में 1.6 मिलियन टन से बढ़कर 2025.26 में 2.3 मिलियन टन हो गई है। हालांकि,

चावल की भूसी के तेल का वास्तविक उत्पादन काफी धीमी गति से बढ़ा है, जो लगभग 0.98 मिलियन टन से बढ़कर 1.10 मिलियन टन हुआ है। भारत में चावल की भूसी का उत्पादन बढ़ रहा है, लेकिन इसकी तेल क्षमता का एक बड़ा हिस्सा अभी भी उपयोग में नहीं आया है।

इस क्षमता को साकार करने के लिए एक समन्वित मूल्य.श्रृंखला दृष्टिकोण की आवश्यकता होगी, जिसकी शुरुआत चावल की भूसी के निष्कर्षण और प्रसंस्करण के लिए बेहतर आर्थिक व्यवस्था से होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि तेल रहित चावल की भूसी पर 5 प्रतिशत जीएसटी लागू करना और चावल की भूसी के फैटी एसिड डिस्टिलेट पर जीएसटी को 18 प्रतिशत से घटाकर 5 प्रतिशत करना कर संबंधी विकृतियों और उलटी कर संरचना को दूर करने में सहायक हो सकता है।

उन्होंने कम लाइपेस वाली धान की किस्मों के लिए अधिक अनुसंधान और विकास सहायता, मजबूत और आधुनिक चावल मिलिंग अवसंरचना और चावल मिलों में चोकर के स्थिरीकरण के लिए प्रोत्साहन की आवश्यकता पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि इन कदमों से तेल निष्कर्षण के लिए उपलब्ध चोकर की मात्रा और गुणवत्ता बढ़ाने में मदद मिल सकती है।

उन्होंने कहा कि धान की भूसी और उसके तेल से बने मूल्यवर्धित उत्पाद धान की कीमत बढ़ाए बिना किसानों को बेहतर दाम दिलाने में मदद कर सकते हैं। साथ ही यह भी कहा कि भारत में धान की भूसी के तेल के उत्पादन में वृद्धि से आयातित खाद्य तेलों पर देश की निर्भरता कम होगी।

स्पेन के कई हिस्सों में अब भी धधक रही जंगल की आग, पीएम सांचेज ने की सावधानी बरतने की अपील

हलधर किसान अंतर्राष्ट्रीय।

स्पेन के प्रधानमंत्री पेड्रो सांचेज ने 15 अगस्त को देश के विभिन्न हिस्सों में लगी आग की स्थिति पर चिंता जताई। उन्होंने कहा कि सरकार आग की घटनाओं के घटनाक्रम पर नजदीकी नजर बनाए हुए है। आग पर काबू पाने और लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करने में जुटे अग्निशमन कर्मियों, आपातकालीन सेवाओं और अन्य कर्मचारियों के प्रयासों की भी सांचेज ने सराहना की। सांचेज ने यूएमई यानी स्पेन की मिलिट्री इमरजेंसी सर्विस की पोस्ट को शेयर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर शेयर करते हुए उनके प्रयासों की प्रशंसा की।

पोस्ट में कहा कि देश के अलग-अलग हिस्सों में लगी आग की स्थिति की लगातार निगरानी की जा रही है। आग की लपटों से मुकाबला करने और लोगों की रक्षा के लिए बड़ी संख्या में पेशेवर और कर्मचारी लगातार अथक प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने आग बुझाने के अभियान में जुटे सभी लोगों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि कठिन परिस्थितियों के बावजूद राहत और बचाव कार्य जारी हैं। प्रधानमंत्री ने आग से प्रभावित इलाकों में रहने वाले लोगों से विशेष सतर्कता बरतने की अपील की।

प्रधानमंत्री सांचेज ने कहा.मौजूदा परिस्थितियों में लोगों को अधिकतम सावधानी बरतने की जरूरत है। नागरिकों से प्रशासन और आपातकालीन सेवाओं की ओर से जारी किए जा रहे निर्देशों का पालन करने का आग्रह मैं लोगों से करता हूं। स्पेन पिछले कुछ दिनों से भयंकर गर्मी और आग से खाक होते जंगलों के कारण परेशान है। तेज गर्म हवाओं और शुष्क मौसम के बीच जंगल की आग तेजी से फैलने का खतरा बढ़ जाता हैए जिससे आसपास के इलाकों में रहने वाली आबादी के लिए भी जोखिम पैदा होता

है। टैग की गई पोस्ट में अग्निशमन दल हुएस्का और जरागोजा की प्रांतीय काउंसिल को बचाने की जद्दोजहद करते देखे जा सकते हैं। 14 अप्रैल को काफी भयावह तस्वीर और क्लिप्स सामने आए थे। जहां उत्तर.पूर्वी स्पेन के अर्गान में फायर फाइटर्स सदियों पुराने ***सैन जुआन डी ला पेना*** मोनेस्ट्री परिसर को बचाने की कोशिश में जुटे दिखे। यहां जंगल में लगी भीषण आग 9,000 हेक्टेयर से ज्यादा इलाके में फैल गई है। आस.पास के इलाकों से करीब 900 लोगों को सुरक्षित जगहों पर भेजा गया। फायर फाइटर्स की टीमें इस ऐतिहासिक जगह के पास आग बुझाने में लगी हुई थीं।

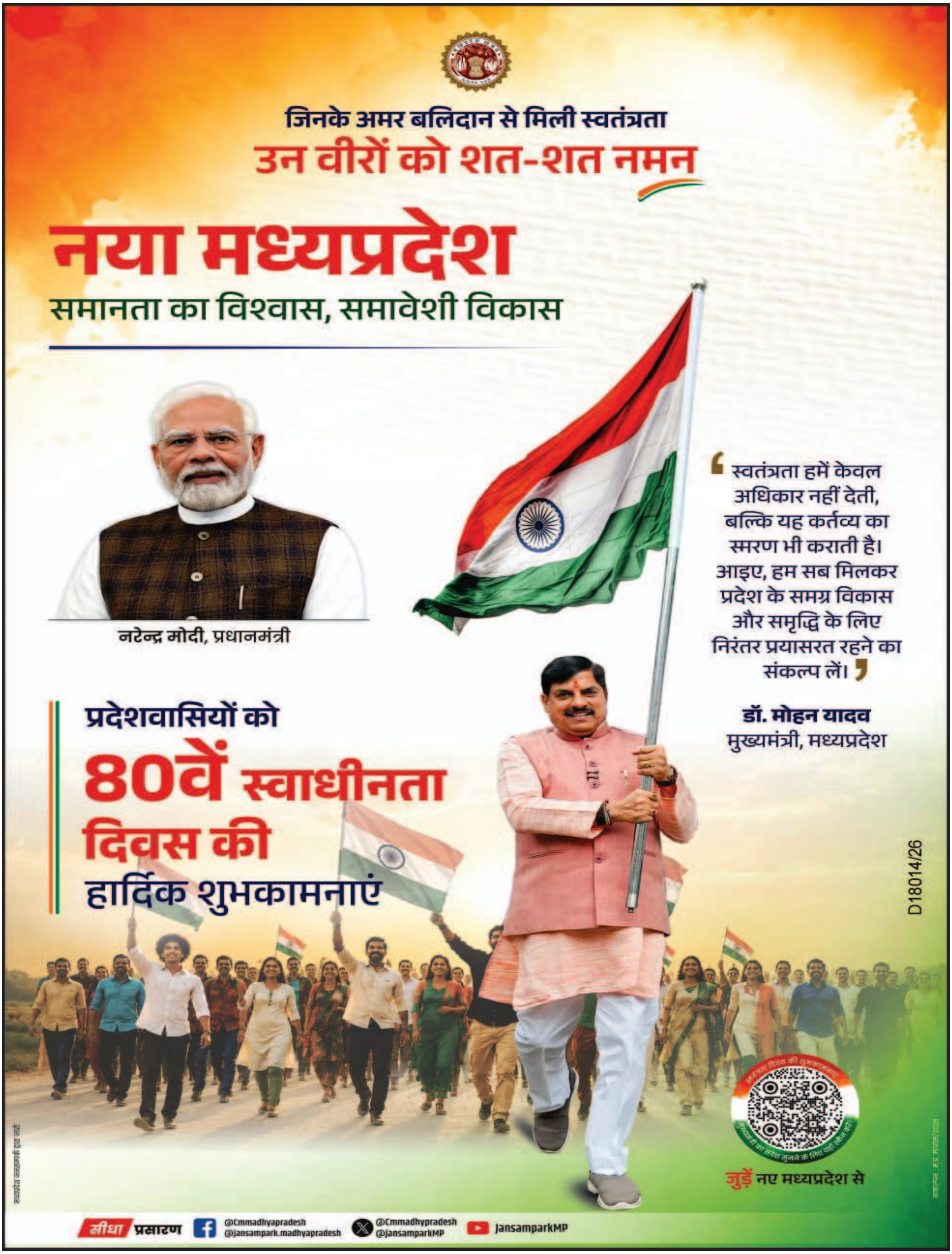

स्वामी विवेक जैन, प्रकाशक, विवेक जैन, मुद्रक कैलाश महाजन द्वारा गोपाल प्रिंटिंग प्रेस, तिलक पथ, खरगोन से मुद्रित एवं 26/1, विवेकानंद कॉलोनी, वार्ड नंबर 5, खरगोन, जिला खरगोन से प्रकाशित, पिन नं. 451001 (मप्र) संपादक विवेक जैन, RNI No. MPHIN/ 2022/85285. मोबा. नं. 98262 25025, 94254 89337 (सभी विवादों के लिए न्याय क्षेत्र खरगोन रहेगा)